लचर क़ानून व्यवस्था और मॉब लिंचिंग

ए. असफल की आपबीती रिपोर्ट

इन दिनों एक बहुत ही खतरनाक शब्द-युग्म मॉब लिंचिंग ने हमें आक्रांत कर रखा है। भीड़ द्वारा इस सिलसिले में लगातार हत्याएं की जा रही हैं। इस शब्द-युग्म को सुनते ही हर एक की रूह कांप जाती है।

संयोग से अभी हाल ही में इस शब्द से हमारा साबिका कुछ ऐसे पड़ा कि हतप्रभ रह गए। हुआ यह कि मैं और महेश कटारे जोकि मध्य प्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन की हीरक जयंती मनाकर भोपाल से ग्वालियर लौट रहे थे। मैं एक लोअर बर्थ पर था और महेश जी मेरे ऊपर मिडिल पर। सामने की लोअर बर्थ पर एक युवती लेटी थी और उसके ऊपर की मिडिल पर उसके पिता। इसके अलावा हमारे कूपे के सामने साइड लोअर पर एक अन्य लड़की लेटी थी और उसके ऊपर अपर बर्थ पर उसकी मां। घटनाक्रम ललितपुर के बाद शुरू हुआ जबकि रात का अंधेरा फैलने लगा। हमारे सामने वाली अपर बर्थ पर एक व्यक्ति बैठा शाम के धुंधलके से ही कोल्ड ड्रिंक्स की बॉटल से कोई सफेद और मटमैला सा पदार्थ पी रहा था। बीच-बीच में वह नमकीन भी खाता जा रहा था। थोड़ी देर बाद वह व्यक्ति जबकि गाड़ी झांसी के पास पहुंच रही थी, अपनी अपर बर्थ से उतरकर लड़की की बर्थ पर आकर बैठ गया। चेहरे-मोहरे, वेशभूषा, सामान और हाव-भाव से वह व्यक्ति एक फौजी लग रहा था! पता नहीं उसने क्या हरकत दी कि लड़की ने जोर से अपना पैर मारा...तो उसने आगे की ओर हाथ बढ़ाकर शायद उसके घुटने के ऊपर नोंच लिया! जिससे वह लड़की उठ कर अधबैठी हो गई और उसके बाद उस व्यक्ति ने उसके सीने पर हाथ रख दिया।

इस घटना से मैं एकदम उत्तेजित हो गया। पर अपनी उम्र और कमजोरी का ख्याल कर जीभ दबा कर रह गया। लेकिन फिर भी मैंने उठकर लाइट तो जला ही दी और महेश जी से कुछ कहने लगा। इतने में वह अनाम फौजी खड़ा हुआ और उसने झट से लाइट बंद कर दी तथा वह फिर से बैठकर उस लड़की के साथ छेड़खानी करने लगा। अब तक लड़की के पिता को भी यह बात पता चल गई थी। मिडिल वाली बर्थ पर था। वह नीचे की ओर सिर झुकाकर वाकया देखने लगा था। पर कुछ कहने की हिम्मत नहीं जुटा रहा था।

महेश दादा और मैं भी उस वक्त उस हट्टे-कट्टे आदमी का रौद्र रूप देख सहमे से रह गए थे। लेकिन इसी बीच एक सुखद वाकया यह हुआ कि हमारे कूपे के सामने साइड लोअर पर जो लड़की लेटी थी वह अपने फोन से पुलिस से बात करने लगी...। उसने जोर-जोर से बताना शुरू कर दिया के फलां गाड़ी की, फलां कोच में, फलां बर्थ पर छेड़खानी की घटना हो रही है। आप यहां जल्दी आ जाइए।

इतना सुनना था कि वह फौजी झटके से उठा और उसने उस लड़की को एक जोरदार तमाचा मारा, जिसकी चटाख की आवाज से हम सब दहशत में आ गए। और इसके साथ ही वह लड़की बहुत जोर से चीखी, हाय- मम्मी! कान फट गया। यह सुन उसकी मां अपर बर्थ से एकदम नीचे कूद पड़ी और वह गिरते गिरते बची। लेकिन वह फौजी उस लड़की की चोटी पकड़ जोर से झिंझोड़ने लगा, दांत पीसता, बकता हुआ- साली पुलिस को बुलाएगी...क्या कर लेगी पुलिस...मैं उसका बाप आर्मी मैन! मेरा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता! समझी कि नहीं समझी!

लड़की जोर जोर से चीख रही थी, मम्मी कान फट गया, मम्मी कान में बहुत दर्द है, ओ-माँ! लेकिन फौजी अपनी हरकत से बाज नहीं आ रहा था। शर्मनाक तो यह कि पूरा डिब्बा चुप था, किसी में भी इतनी हिम्मत नहीं थी कि उससे दो शब्द कहता! उसका हाथ पकड़ना तो जैसे बम को छूना था!

यही करते-करते झांसी आ गया। कुछ सवारियां उतर गयीं, लेकिन एक भी सवारी चढ़ी नहीं। स्टेशन आने पर फौजी अपनी बर्थ पर चढ़ गया था। हम लोगों ने समझा कि मामला शांत हो गया। हालांकि हम लोग इस बात का इंतजार कर रहे थे कि पुलिस वाले आएं और उसे गिरफ्तार करें तो हम भी गवाह बनें। पर कोई पुलिस नहीं आई और गाड़ी स्टेशन से चल दी। अब तक अंधेरा और गहरा गया था। दतोया निकलने के बाद वह फौजी फिर नीचे उतरा तो मैंने उठकर लाइट जलाई। लेकिन उसने तुरंत बंद कर दी और मेरे सामने वाली बर्थ पर जो लड़की सहमी सी अधलेटी थी, उसकी बगल में आकर बैठ गया। तथा फिर उसके साथ कुछ न कुछ हरकत करने लगा। इस बात से हम लोग बहुत तनाव में आ गए। मैं उठा तो महेश कटारे समझ गए कि मैं उसे रोकने जा रहा हूं। इस पर वे भी अपनी बर्थ से नीचे आए और कान पर जनेऊ चढ़ाते हुए मुझे अपने पीछे आने का इशारा किया। मैं उनके पीछे चलता हुआ बाथरूम तक पहुंच गया। वहां बाथरूम में न जाकर उन्होंने मुझसे कहा कि- ग्वालियर आने दो, तब हम इसका इंतजाम करेंगे... यहां कुछ करने पर खतरा हो सकता है... इसके पास पिस्टल है, यह हमें गोली भी मार सकता है!

मैंने कहा- ग्वालियर में गाड़ी कितनी देर रुकेगी... और हम क्या कर लेंगे? तब उन्होंने कहा कि- वहां उतर कर तुम जीआरपी थाने चले जाना, गाड़ी चल पड़ेगी तो मैं जंजीर खींच दूंगा। पुलिस को लेकर आना तभी हम इससे लिपट सकेंगे।

मैं उनकी बात समझ गया और अपनी सीट पर आकर लेट गया। इसके बाद वे भी मेरे पीछे आ गए और अपनी बर्थ खोल ली तथा हम दोनों लोअर पर बैठ गए। फौजी जो कि अभी तक सामने वाली लोअर पर अधलेटा लड़की को छेड़ रहा था, हमारी वाली सीट पर आ गया और उसने अपने पैर उस लड़की की बर्थ पर रख लिए। अब वह उसे पैरों से छेड़ने लगा। लड़की बहुत परेशान थी। और हम दोनों एक-दूसरे की ओर विवशता से देख रहे थे। बीच बीच में मैंने उससे पूछा, भाई साब आप कहाँ जाएंगे, घर जा रहे हैं, ड्यूटी जा रहे हैं... पर वह कुछ बोलता न था, हरबार एक कड़वी मुस्कान के साथ मुझे देख जरूर लेता। महेश दादा की मुख भंगिमा बता रही थी कि वे उसे मन ही मन कह रहे थे, बेटा ग्वालियर आने दे!

फिर उसे न जाने क्या सूझा कि, सामने वाली बर्थ पर फिर पहुंच गया, जिस पर वह लड़की कान पकड़े लेटी थी, जिसको उसने तेज थप्पड़ मारा था। इस तरह फिर वह उसे छेड़ने लगा।

बहुत मुश्किल थी। खूब खून खौल रहा था, पर हम सिर्फ घड़ियां गिन रहे थे... कि कब ग्वालियर आए और हम उसे सबक सिखा पाएं! लड़कियों की जान छुड़ा पाएं!

बड़ी मुश्किल भरे थे वे 40 मिनट...क्योंकि डिब्बे में अंधेरा था और वह बारी बारी से दोनों लड़कियों को कहां कहां नोंच रहा था, हमें पता भी नहीं चल रहा था। वह कभी इस लड़की के शरीर से खेलता तो कभी उठकर उस लड़की के शरीर से खेलने लगता। डिब्बे में हम इतने लोग थे पर किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि उस दुष्ट का विरोध करें।

बड़ी मुश्किल से ग्वालियर आया। लेकिन ग्वालियर जैसे ही आया, मैं उतर कर सबसे पहले बाहर निकल गया और सीढ़ियों पर दौड़ता हुआ प्लेटफार्म नंबर एक पर जा पहुंचा, वहां संयोग से मुझे एफ़आइआर का एक परिचित जवान मिल गया। मैंने उससे कहा कि- गाड़ी में इस-इस तरह छेड़खानी हुई है... तो उसने कहा, हां- चाचा, झांसी कंट्रोल रूम से कंप्लेंट नोट कराई गई है। पर यह जीआरपी का केस है... यह कहकर वह मुझे संबंधित स्थान पर ले आया। हांफते हुए बमुश्किल मैंने वहां अपनी बात कही तो वहां बैठे 5-6 सिपाही और दारोगा एफआईआर फॉर्म हाथ ले तुरंत मेरे साथ चल दिए। लेकिन तब तक गाड़ी प्लेटफार्म पर रेंगने लगी। मैंने पुलिस के साथ दौड़ते हुए महेश कटारे को फोन लगाया तो उन्होंने कहा कि- मैंने जंजीर खींच दी है... तुम अगले पुल से आओ, रुकने तक डिब्बा वहीं पहुंच जाएगा। मैंने उन सिपाहियों को पकड़ कर विपरीत दिशा में खींचा और हम लोग दौड़ते हुए एक्सीलेटर पर पांव रखकर पुल चढ़ गए और फिर नीचे की ओर दो नंबर पर सीढ़ियों से उतर आए। संयोग की बात थी कि वह बोगी सीढ़ियों के ऐन सामने आकर रुकी! महेश दादा गेट पर खड़े थे।

मैं चीखा-कहा, यही है! जवान दौड़कर अंदर घुस गए, उनके साथ महेश दादा भी। पर वह फौजी जवान इतना तगड़ा था कि खींचे नहीं खिंच रहा था। बड़ी मुश्किल से वे उस पर डंडे फटकारते और घसीटते हुए नीचे खींच कर लाए। इसके बाद पूरा डिब्बा उतर कर नीचे आ गया और उस व्यक्ति को हाथों से ही नहीं, अपने बूटों से भी कुचल-कुचल कर मारने लगा। लगा पलक झपकते-झपकते बोगी और प्लेटफार्म की भीड़ हिंस्र पशुओं में बदल गयी!

महेश कटारे चिल्लाए, यह क्या हो रहा है? यह तो मॉब लिंचिंग है! पुलिस वालों से कहा, इसको जल्दी से घसीटकर लॉकअप में ले जाकर बंद कर दो, नहीं तो भीड़ मार डालेगी!

बहरहाल, किसी तरह उसे बचाते हुए, गिरते-पड़ते हम सुरक्षा का घेरा बनाकर एकसीलेटर पर डाल प्लेटफॉर्म नम्बर एक पर ले आए तथा लॉकअप में बंद कराया। गाड़ी अब तक जा चुकी थी।

भीड़ हत्या या मॉब लिंचिंग पूर्वचिन्तित बिना किसी व्यवस्थित न्याय प्रक्रिया के, किसी अनौपचारिक अप्रशासनिक समूह द्वारा की गई हत्या या शारीरिक प्रताड़ना को कहा जाता है। अराजकता की यह आंधी भारत में क्यों शुरू हुई, इसकी तह तक जाना होगा नहीं तो यह हमारा जीना दूभर कर देगी। दरअसल, भीड़ का मनोविज्ञान सामाजिक विज्ञान का एक छोटा-सा हिस्सा रहा है। यह एक अजीब और पुराना तरीका है जिसकी पुनरावृत्ति समाज में आज पुन: अस्थिरता आने और कानून-व्यवस्था के ऊपर भरोसा उठ जाने से निर्मित हो गयी है।

मेरे परिचित RPF के जवान ने बाद में मुझे बताया कि वह फौजी था तो उसके फोन पर एमसीओ वाले आ गए थे जो उसे छुड़ा ले गए और शायद उन महिलाओं ने भी एफआईआर फार्म पर दस्तखत नहीं किए थे कि- वे तारीख पेशी के झंझट में नहीं पड़ना चाहती थीं।

अर्थात- न रखवाले जिम्मेदारी लेंगे और न पीड़ित प्रताड़ित आगे आएंगे.... तो क्या भीड़ की आंधी इसी तरह बढ़ती रहेगी?

नज़रिया: 10 साल पहले वाल्मीकि समुदाय के बारे में क्या कह गए थे मोदी?

राजीव शाह

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 5 अक्टूबर की सुबह ट्वीट किया, वाल्मीकि जयंती की शुभकामनाएं, एक महान संत और साहित्यिक व्यक्ति के उच्च आदर्श और कार्य कई पीढ़ियों का मार्गदर्शन करती हैं.।

मोदी की इन शुभकामनाओं में महान संत, बड़े साहित्यिक, उच्च आदर्शों और कार्यों वाले व्यक्ति जैसे शब्द प्रयोग किए गए. ये सभी शब्द उस व्यक्ति के लिए लिखे गए, जिन्होंने दुनिया के एक महान ग्रंथ रामायण की रचना की.

लेकिन वे उन लोगों की भावनाओं को छूने में नाकाम रहे जो खुद को वाल्मीकि का अनुयायी मानते हैं, जो सफाईकर्मी हैं, जो देश का सबसे ज़्यादा उपेक्षित समुदाय है, जो भारत की जाति व्यवस्था में सबसे निचले पायदान पर मौजूद है.

वाल्मीकि समुदाय पर मोदी के विचार

वाल्मीकि समुदाय कई पीढ़ियों से छुआछूत का सामना कर रहा है, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी ने वाल्मीकि जयंती के अवसर पर एक शब्द भी वाल्मीकि समुदाय के लिए क्यों नहीं बोला?

साल 2007 की बात है. उस समय नरेंद्र मोदी गुजरात के मुख्यमंत्री थे और उन्होंने प्रदेश के कुछ वरिष्ठ अधिकारियों के साथ मिलकर कर्मयोगी शिविरों में भाषण दिए थे. कर्मयोगी नाम की एक किताब में इन भाषणों को प्रकाशित किया गया था.

इस किताब की पांच हज़ार प्रतियां छपवाई गई लेकिन उन्हें वितरित नहीं किया गया. इसका कारण था दिसंबर 2007 में गुजरात में होने वाले विधानसभा चुनाव और राज्य में जारी आचार संहिता.

इस किताब को छपवाने के लिए गुजरात की एक बड़ी पीएसयू कंपनी गुजरात स्टेट पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन ने भी पैसा लगाया था. इस रंगीन किताब के 48वें और 49वें पन्ने पर कई खूबसूरत तस्वीरें थी.

इस किताब के मुताबिक, मोदी ने वाल्मीकि समुदाय के सदियों से चले आ रहे पेशे, जैसे दूसरों की गंदगी साफ करने को 'आध्यात्मिक अनुभव' जैसा बताया था.

सफाईकर्मी का काम आध्यात्मिक संतुष्टि

किताब में मोदी ने लिखा था, मुझे नहीं लगता कि ये लोग सिर्फ़ अपना जीवनयापन करने के लिए यह काम करते हैं, अगर ऐसा होता तो शायद वे पीढ़ी दर पीढ़ी इसे जारी नहीं रखते।

मोदी के हवाले से किताब में आगे लिखा गया, च्जिकिसी एक मौके पर किसी न किसी को तो यह आभास हुआ होगा कि यह काम उन्हें (वाल्मीकि समाज) पूरे समाज और ईश्वर की खुशी के लिए करना है. उन्हें यह समझना होगा कि यह काम उन्हें ईश्वर ने दिया है और सफाई के इस काम को उन्हें अपनी आंतरिक आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए सदियों तक जारी रखना होगा. इस बात पर विश्वास करना बहुत मुश्किल है कि उनके पूर्वजों के पास कोई दूसरा काम करने का विकल्प नहीं था.

24 नवंबर 2007 को टाइम्स ऑफ इंडियाज के अहमदाबाद संस्करण में मेरा एक लेख छपा था, जिसका शीर्षक था, च्जाति के आधार पर कर्मयोगी, वाल्मीकियों के लिए सफाई का काम अध्यात्मिक अनुभव

गटर की सफाई आध्यात्मिक काम कैसे?

मोदी के भाषणों वाली यह किताब आज तक जारी नहीं हुई है. लेकिन नरेंद्र मोदी ने वाल्मीकि समुदाय के काम को आध्यात्मिक अनुभव बताकर हलचल जरूर पैदा कर दी थी. मोदी की इस परिभाषा की कई दलित चिंतकों ने आलोचना की थी.

जाने-माने दलित कवि नीरव पटेल ने इसे दलितों का उत्पीड़न जारी रखने के लिए एक बड़ी साजिश का हिस्सा बताया था, उन्होंने बहुत कड़े शब्दों में पूछा था, मोदी जिन कामों को आध्यात्मिक संतुष्टि वाला बता रहे हैं, ये सभी काम कभी उच्च जातियों ने क्यों नहीं किए?

उपन्यासकार और कार्यकर्ता जोसेफ मैचान ने मोदी के इन शब्दों को ब्राह्मणवादी सोच का आईना बताया था.

उन्होंने हैरानी जताते हुए कहा था, गटर से गंदगी साफ करने को कोई आधात्यमिक काम कैसे बोल सकता है?

ख़ैर उस समय गुजरात में मेरे उस लेख पर किसी ने ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, कांग्रेसी नेता चुनावों में व्यस्त थे और उनके पास मेरे लेख को देखने का समय नहीं था.

कुछ दिन बाद जिस अधिकारी ने मुझे 'कर्मयोगी' नामक वह किताब दी थी, उसने मुझसे कहा, ''आपने वह लेख लिखकर क्या गज़ब कर दिया है.''

मैंने उनसे पूछा कि ऐसा भी क्या गज़ब हो गया, क्योंकि गुजरात में तो किसी ने भी मेरे लेख पर ध्यान नहीं दिया. तब उस अधिकारी ने बताया कि मेरा वह लेख तमिलनाडु में अनुवाद करके प्रकाशित किया गया, जिसके बाद दलितों ने नरेंद्र मोदी के पुतले जलाए.''

वह अधिकारी मुझसे उस किताब को वापस लेना चाहता था. मैंने ऐसा कर भी दिया. बाद में मुझे मालूम चला कि गुजरात के सूचना विभाग ने मोदी के निर्देश पर उस किताब के वितरण पर रोक लगा दी थी. वह किताब आज भी गुजरात सूचना विभाग के गोदाम में धूल खा रही है.

हालांकि उस अधिकारी को किताब लौटाने से पहले मैंने किताब के विवादित पाठ की फोटोकॉपी करवा ली थी जिसमें आध्यात्मिकता की बातें लिखी गई थीं.

एक साल बाद किताब के उस विवादित पाठ की प्रति, कांग्रेस नेता प्रवीण राष्ट्रपाल के हाथ लग गई. दलित कार्यकर्ता से राजनेता बने प्रवीण ने मोदी को दलित विरोधी बताकर यह मुद्दा राज्यसभा में उठाया.

राज्य सभा में यह मुद्दा उठने के बाद कई कांग्रेसी नेताओं ने मुझसे उस किताब की प्रति के लिए संपर्क किया. पिछले साल तक भी कई कार्यकर्ता, राजनेता यहां तक कि कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के राजनीतिक सलाहकार अहमद पटेल ने भी मुझसे उस किताब की प्रति के लिए संपर्क किया. जिसे मैंने शालीनता से कहा कि मेरे पास वो किताब नहीं है.

मैं आज तक समझ नहीं पाया कि आखिर मोदी ने क्या सोचकर वाल्मीकि समुदाय के काम को अध्यात्म से जोड़ा था? हालांकि मोदी उन्हें कर्मयोगी कहकर वाल्मीकि समुदाय के प्रति अपना प्रेम जताना चाह रहे थे. विशेष तौर पर सरकारी कर्मचारियों के प्रति.

कर्मयोग नामक उस किताब में मुख्यतौर पर सरकारी कर्मचारियों के काम करने संबंधी बातें लिखी गई थी, जिसमें यह समझाया गया था कि सरकारी कर्मचारियों को फल की चिंता किए बिना निष्ठापूर्वक अपना काम करना चाहिए जिससे उन्हें आध्यात्मिक शांति मिल सके.

बहुजन राजनीति के उद्भव और पतन के कुछ सूत्र

कँवल भारती

यह कहानी शुरू होती है, RPI से.

RPI यानी रिपब्लिकन पार्टी, जिसके बढ़ते प्रभाव और जबरदस्त भूमि आन्दोलन ने कांग्रेस का सिंहासन हिला दिया था.

कांग्रेस के लिए RPI को खत्म करना या तोड़ना जरूरी था.

कांग्रेस ने RPI के बिकाऊ नेताओं को पकड़ा. और वह उसे कमजोर करने में कामयाब हो गई. देश भर में RPI का ढांचा बिखर गया.

कांग्रेस के सिंहासन के दलित, पिछड़े, मुस्लिम और सवर्ण चार पाए थे.

इन चारों पायों पर आरएसएस की तीखी नजर थी. कांग्रेस को खत्म या कमजोर करने के लिए दलित, पिछड़े और मुस्लिम इन तीन पायों को तोड़ना जरूरी था. इसके बिना हिन्दू राजनीति सत्ता में नहीं आ सकती थी.

इसी दौरान आरएसएस को बिल्ली के भाग्य से छींका हाथ लगा, या छींका उसी ने तैयार किया. यह विश्लेषण का विषय है.

बिल्ली के भाग्य से इसी दौरान मुलायम सिंह यादव समाजवादी बनकर पिछड़ों के नेता के रूप में उभर कर आ गए.

इसी दौरान बहुत सोचसमझ कर मंदिर आन्दोलन खड़ा किया गया. कांग्रेस के नरसिम्हा राव, जो हिंदूवादी थे, आरएसएस के बहुत काम आए. अयोध्या में बाबरी मस्जिद गिरा दी गई. और एक ही झटके में देश भर का मुसलमान कांग्रेस से अलग हो गया. कांग्रेस के सिंहासन का एक पाया तोड़ने में आरएसएस सफल हो गया.

कांशीराम और मुलायम सिंह यादव ने मिलकर चुनाव लड़ा, और उत्तर प्रदेश से कांग्रेस का सफाया हो गया. नंगे-भूखों ने साइकिल से और पैदल घूम घूम कर विजय हासिल कर ली.

सपा-बसपा ने मिलकर कांग्रेस के दलित, पिछड़े और मुस्लिम तीनों पायों को तोड़ दिया. भाजपा तो वैसे भी दौड़ में नहीं थी, पर वह कांग्रेस की हार पर खुश थी.

कांग्रेस के तीनों पाए टूटने के बाद कांग्रेस का सवर्ण पाया तो भाजपा का ही था.

अब जरूरत थी, आरएसएस को दलित-पिछड़ों को भाजपा से जोड़ने की, सवर्ण उसके साथ था ही, मुसलमानों की उसे जरूरत नहीं थी.

आरएसएस के इस काम में काम आए कांशीराम.

कांशीराम ने आरएसएस और भाजपा से समझौता किया.

कांशीराम के तीन पाए थे दलित, पिछड़े और अल्पसंख्यक.

कांशीराम ने मुलायम सिंह यादव से गठबंधन तोड़कर भाजपा से हाथ मिला लिया और और इस हाथ ने मुसलमानों को बसपा से दूर कर दिया.

बसपा का एक पाया टूट गया, जो आरएसएस भी चाहता था.

मुसलमान सपा से जुड़ गया, इसके सिवा उसके पास कोई विकल्प भी नहीं था.

बसपा के पास अब भी कुछ पिछड़ा वोट था. उसे खत्म करने में बाबू सिंह कुशवाहा और स्वामी प्रसाद मौर्य को बसपा से ठिकाने लगाने का काम हुआ, जिसमे भाजपा को पूरी सफलता मिली. मायावती भाजपा के सहयोग से तीन बार मुख्यमंत्री बन चुकी थीं, उनकी गठबंधन सरकार में भाजपा शामिल थी. भाजपा ने मायावती को पूरी छूट दी. मायावती भ्रष्टाचार करती रहीं, और भाजपा उनका पूरा बहीखाता तैयार करके अपने पास रखती रही, ताकि सनद रहे और वक्त पर काम आवे. इसी 'सनद' के बल पर मायावती ने पिछले लोकसभा के चुनावों तक भाजपा का कार्ड खेला. अब भी यह सनद मायावती से वही कराएगी, जो भाजपा चाहेगी, वरना वे जानती हैं, लालू यादव आज कहाँ हैं?

यादव वोट को विभाजित करने के लिए शिवपाल सिंह यादव का समाजवादी मोर्चा अस्तित्व में आ ही गया है. जाटव वोट को विभाजित करने के लिए चन्द्रशेखर रावण को दो महीने पहले ही छोड़ने का और कोई कारण समझ में नहीं आ रहा है.

पिछड़ों में मौर्य, कुशवाहा, सैनी, काछी, लोधी में कोई प्रतिरोध का नेतृत्व नहीं है, इसलिए वे सब भाजपा के साथ हैं.

67 दलित जातियों में जाटव या चमार को छोड़कर शेष वाल्मीकि, खटिक, पासी, धानुक, धोबी, आदि में भी कोई प्रतिरोध का नेतृत्व नहीं है, इसलिए वे सब भी भाजपा के साथ हैं.